

बीनुवेहेतंतबीनुप्यासबीनानर॥ मोक्षपरम  
 पदपईयेहो॥ अष्टपोहोरमंतरटणरदो॥ १॥ सुन  
 कादीकनारदबुंहादीक॥ नीगंमतयेतीजश  
 गेयेहो॥ अरुजोगपोजेसीवसारंन॥ अथाह्या  
 हनहीपेयेहो॥ अष्टपोहोर॥ २॥ अष्टादशषटनव  
 तरणोईत॥ वीवीधीभातवीस्तेयेहो॥ एहीमी  
 सीसकलवीकलतीतविनती॥ अधीकभरम  
 भवभेयेहो॥ अष्टपोहोर॥ ३॥ अष्टावक्रकपीलह  
 स्तामल॥ दत्तसतजतमतग्रहीयेहो॥ चारुलस  
 दक्षदीमप्रतुभव॥ बुंलभेदभरपईयेहो॥ अष्ट  
 पोहोर॥ ४॥ सरवसीधांतसाहारसरलपद  
 चहीतंतव्यापलखेयेहो॥ तातेआंत्यकधुगत  
 आगंम॥ वागंमविरलापईयेहो॥ अष्टपोहो॥ ५॥  
 अतीउतकएपरमषुदषावंत॥ सदगुरुसेसुध  
 लहीयेहो॥ सतकुवेरसदीदीतसोहीपद॥ केव  
 लमाघसदेयेहो॥ अष्टपोहोर॥ ६॥ ईतीश्रीधुन्य  
 पदसंपुर्णः॥ समाप्तः॥ ॥  
 अथतीथीपदलीयते॥ अमांसेवासोसुंन्यमे॥  
 आपअक्कअवाच॥ पाडुपांएचक्षुवीन॥ स्वे  
 चेतंतमांसोहाच॥ १॥ जादीनजलमनहीसकीको  
 बुंलावीसुम्हावेश॥ तेत्रीशकोडदेवनही॥ चंदा



तीर्थ

५१

सुरनहीसेश॥२॥आपइष्टायेअरूपथी॥रूपधरो  
भगवंत॥ताइष्टाकीसक्तीहे॥सक्तीसेपंचुतंत॥३॥  
पंचतत्वमेजांणीये॥ओमसंकलतीआद्य॥ग्राह  
कतत्वसमीरहे॥भयोहेसुंत्यपसादा॥४॥तत्वस  
हांनकपवंनते॥प्रगदभयोहेतेज॥कलमलजो  
तीतेजते॥उपजभयोअपहेज॥५॥अपत्येअवनी  
उपती॥तत्वपंचमीजोय॥सतकुवेरसंजमक  
रे॥आतमसरवतोसोय॥६॥तीर्थी॥१॥पडवे  
पंजरताहेरु॥उपत्युअचांत्यकजेह॥पंचतत्व  
नेमेखवी॥बांध्योसुधसतेह॥१॥दशपरकारवा  
रवसे॥सीतीतेजगगंनसमोत॥दारेदारेवसेदे  
वता॥पवंतकरतपरीयांता॥२॥मुखचक्रगण  
नापती॥उतपतबुलवीलास॥नाभीकमलवी  
सुरहे॥रुदयेतीरंजनवास॥३॥कंचसेवासोशी  
वती॥नासायेअस्वनीकुवार॥करणयासोद्री  
गपालते॥रसतायेवरुणवीचा॥४॥अधुरुअ  
नलअवीकासहे॥द्रीगतवासीचंडासुर॥ताम  
धेअंसआतमा॥नुरसदाभरपुर॥५॥सुरतनु  
रतकरीतीरषीये॥तीरमलदृष्टीयेनुर॥केहेकु  
वेरतबदरससे॥सांहीयांहालहजुर॥६॥तीर्थी  
२॥बीजेबुधवीचारीये॥पंडासकलपरकाराबो



होतरसेहेस्त्रनाडीवसे॥तामेनवप्रतुसार॥१॥  
 नवमांवाडीतीनहे॥तीनमेद्वपरकास॥सुस्म  
 नाडीसुस्ममण॥भासतसामम्नाकास॥२॥एक  
 चलेदीर्घीरहे॥हरीयारंगसमीर॥रक्तप्रगत्य  
 पीलोपथवी॥स्वेतरंगतेतीर॥३॥सुभ्रचासम्ना  
 कासकी॥तीरसीचलतसमीर॥उंचेपावकम  
 ध्येपथवी॥तीचेचालततीर॥४॥अढीआंगुल  
 आकाशहे॥आंगुलअष्टसमीर॥चतुरस्रग  
 त्यक्षीतीद्वादश॥षोडशआंगुलतीर॥५॥मीष्ट  
 मधुरमोलातीक्षण॥चरपरजांणसमीर॥  
 रिसवीधीपंचुतत्वहे॥लषीलोकेहंकुवेर॥६॥  
 तीथी॥आत्रीजेतंतुंवीचारीये॥आतमाजांण्य  
 अतंत॥धेधातावीपुवरजीत॥तायनआयन  
 अंत॥१॥रोमरोममांरमरहो॥स्वास्यामांहासो  
 हंग॥षटवणसेषटमेसमे॥अवीगत्यआषअ  
 भंग॥२॥जापअजपाहोतहे॥षटदशपंचहजा  
 र॥तापरषटसेआंत्यहे॥आवेपीहोरवीचार  
 ३॥मुलचक्रषटसेजये॥उत्तपतषटहीहजार  
 नाभीकमलषटसेहेस्त॥चलतपवंनमंन  
 लाहार॥४॥षटहीसेहेस्त्रहरदेजये॥अरधउर  
 धमध्यसार॥सहस्त्रकंवभ्रगुचक्रमे॥सहस्त्र



तीर्थी

॥५२

ही गंग नमोकार ॥५॥ एही विधी समरग होत  
हे रासदी वस एक तार ॥ केहं कुवेर दं मे दं मी ॥  
समरो ने सर जंत हार ॥ ६ ॥ तीर्थी ॥ ४ ॥ चोथे चतु  
रदल चक्र कु ॥ नीश्रे करी नीरधार ॥ असर चा  
रवी चार के ॥ बंध करी मुल द्वार ॥ १ ॥ षट से जा प  
जपी जप ॥ देग वरी सुत दां न ॥ ओर चक्र भ्रं मा  
तए ॥ तामे क सपरी यां न ॥ २ ॥ षट ही से हे स्त्रजा  
पजपी ॥ षट दल कमल की मां ही ॥ क स अर पं  
न वा सु देव नी ॥ बं ह्या स क्री हे जं हां य ॥ ३ ॥ उभे च  
क्र कु अनु भवी ॥ त्री तीयो ना भी न वे स ॥ षट ही  
से हे स्त्रजा पजपी ॥ रुद ये चतु रथो हे स ॥ ४ ॥ रुदे  
कमल दल द्वादश ॥ देव नी रं जं न जां हां य ॥ षट ही  
से हे स्त्रजा पजपी ॥ क स अर पं न तु तां हां य ॥ ५ ॥  
से हे स्त्रजा पकं ठे जये ॥ जा के पती सी वरा य ॥ ६ ॥  
से हे स्त्र अगु गंग न मी ॥ सत कु वेर मे ला य ॥ ६ ॥  
तीर्थी ॥ ५ ॥ पंच वटी पर मात मा ॥ आत मा आप  
स बंध ॥ जा प अ जं पा जु क से ॥ छुटे जीव मती मे  
दा ॥ धरणी पवंत मं न धी र करी ॥ सुधो करी मे  
रु सी र ॥ चंद सु र उ ल टा धरी ॥ संम वत हो य सरी  
रा ॥ संम दं म सा धं न सा ध के ॥ वं क ता ल वी धी  
जां ए ॥ गती मती ग मं न ग गं न चठी ॥ पर सं न



पदनीखांण्य ॥३॥ गगंनचढीकरागरजना ॥ ह  
 रषसोषनहीजांहा ॥ पांचपचीसनीपरभवा  
 गांजीसकेतहीतांहा ॥ ४ ॥ अनभेप्रगतोआपसे  
 नीरषीनेनीरमलजोत्य ॥ कालकालव्यापेतही  
 आत्माआपउद्योत्य ॥ ५ ॥ फलमलकलकेसुंन्य  
 मे ॥ तीमरनहीचोफेर ॥ अनहद्यवाजांगरगडे  
 नीरषतसतकुवेर ॥ ६ ॥ तीथी ॥ ६ ॥ छवेमवनी  
 करतासही ॥ सस्वरूपपदसोय ॥ मनबुधची  
 तअहंकारपर ॥ तत्वअसीपदजोय ॥ १ ॥ सांण्य  
 जोगतेजांणीये ॥ देहतणोवीस्तार ॥ षट्दशद्वाद  
 शचोवीश ॥ अस्यरदेहनीलाहार ॥ २ ॥ चतुरगु  
 दाषटउतपत ॥ नाभीयेदशपरमांण ॥ रुदेकम  
 लदलद्वादश ॥ षोडषकंवेजांण्य ॥ ३ ॥ अस्यरषट  
 वीशचोविश ॥ रहतगगंनमेवाश ॥ देअस्यर  
 अगुचक्रमेतामेसस्ववीलास ॥ ४ ॥ अस्यरबा  
 वंनजायगो ॥ अंतकालकुवीलाय ॥ सस्वरूप  
 जामेसमे ॥ ताईत्येलेहेलाय ॥ ५ ॥ आंतपदास्थ  
 अल्पहे ॥ सोहंपदआद्यअनाद्य ॥ केहंकुवेरपीयु  
 परसतां ॥ छुटेकरमकीउपाध्य ॥ ६ ॥ तीथी ॥ ७ ॥  
 सात्वीकज्ञानपेहेचानके ॥ प्रगटभयोपरकाश  
 सावनीरंतरदरशीयो ॥ आतमसबघटवास



तीथी

५३

१॥ सीती पावक जल पवे नही ॥ सुतु मे स्व परका  
२॥ लीस पीत उज्वल शोभ ॥ रंग ये सो सुरभास  
३॥ ज्हां जे हे वो तं मतां हां सही ॥ उंच नीच मं न से  
४॥ ज्यो बाजी गर सुतलां ॥ नाचत चावे एक ॥ ३॥  
ये से सर जंन एक हे ॥ घाट अनंत तपार ॥ कीट प  
तंग बुंहा लगे ॥ आप घे लावं नहार ॥ ४॥ कल कुं  
ची करता करे ॥ हरी वीना हाले नही पांत ॥ उत्त  
म मध्यं मतां हां नही ॥ सर वे एक समांत ॥ ५॥ ए  
हे वा सा हे व पां मवा ॥ सत गुरु शब्द आराध ॥ तं  
न संन धं न प्र पंत करी ॥ के हं कु वे र तो र्सा ध  
६॥ तीथी ॥ न ॥ साधं न प्र प्य कार के ॥ मुंडा पंच  
पे हे चां त्य ॥ तते सा धं न प्रां स हे ॥ पुरण प द्वा  
र वां ए ॥ १॥ करणी तु बल जां हां नही ॥ करत व स  
कल बी झादा ॥ षट् दर संन सर से हे स्तर ॥ तां हां  
नही आं त्य उपाध्य ॥ २॥ श्यामा या जां हां नही  
रुप रंग नही रे ष ॥ दृष्टी मे आवे नही ॥ अदृष्ट आप  
अले ष ॥ ३॥ नी रा कार नी र धार हे ॥ नी र गुं न रूप  
नी द्यां त ॥ अये प्र वी त्या सी आद्य हे ॥ पर मी त पुर  
स पुरां न ॥ ४॥ जां हां इ क्षिण ए के नही ॥ र ही त आ लं  
वन वास ॥ जे से दी न कर भंड मे ॥ एक अने क उजा  
स ॥ ५॥ साक्षी वत स्र व वी श्व ता ॥ वित प्र श ग ती



जांण। केहं कुवेर को ईसंत कु ॥ जीनकी परमपे  
 चांण ॥ ६ ॥ तीथी ॥ ६ ॥ नवनीधीनववासना ॥ न  
 वधाभक्तीनीहास ॥ नवव्याकरणनवग्राहेक ॥ ६  
 हतदेहमांहीसार ॥ १ ॥ तातेवरजीतवस्तहो ॥ स  
 हस्तरहीतअध्यास ॥ सदासरवदा नायहे ॥ नही  
 उतपतनेनास ॥ २ ॥ जैसेलेहेरसमुंडकी ॥ उवे  
 अनंतअपार ॥ वायुयोगउपजेषये ॥ येसोसुह  
 संसार ॥ ३ ॥ बंलसमुंडलेहेरहे ॥ जीवजंतसब  
 कीय ॥ जेतीउवेजोरसे ॥ तेतीचालेसोय ॥ ४ ॥ ये  
 सोज्ञानवीचारीये ॥ तबसाहेबनहीडुर ॥ आ  
 सपासबाहेरमांही ॥ समकरहीचकचुर ॥ ५ ॥  
 तबवरतीकपांहांजायगी ॥ सुरतरहीतबयेन  
 केहंकुवेरगवंतकरे ॥ हरीजलमेंजंतमेंनह  
 तीथी ॥ १ ॥ दशईडीमंतरसभडी ॥ सुक्तभयाद  
 शहार ॥ गमंनविहंगममीनको ॥ मारगपा  
 योसार ॥ १ ॥ आडाअटकणनहीएकगमा ॥  
 जीतदेवेतीतयोम ॥ तिनउघाडेनीरमे ॥ इहेन  
 आवेभोम्य ॥ २ ॥ कलावंबककीरहो ॥ आस  
 पाससबतोडी ॥ बंलसतंतरभरीरहो ॥ एही  
 दृष्टांतेजोई ॥ ३ ॥ होतबुदंगानीरमे ॥ वायुजोगआ  
 काश ॥ त्योचेतंनमहीवीश्वहे ॥ मायाप्रकृतीउ

६



तीर्थी

॥५८

पास ॥४॥ जौ बोरंगा वारमे ॥ उपजे ते अलपाय  
ये से चेतन बंधु मे ॥ वीरवसक ललये थाय ॥५॥  
करम धरम के बांधणे ॥ जीव जंतु प्रवतार ॥ केहं  
कुवेर केश कौं फरे ॥ दरसो अपरं मपार ॥६॥ ती  
र्थी ॥ ११ ॥ एक दशा वंत प्रव भवी ॥ भव मे तव भ  
रमाय ॥ आप सही त आपु नही ॥ केहे तो करे प्रति  
हाय ॥ १ ॥ मरत स जी वंत जक्रमे ॥ जी वंत मुक्ता  
जिह ॥ ज्यो लीलं धर नीर मे ॥ ये से वर ते देहा ॥ २ ॥  
ली लगये तीर नीर मला ॥ पंडापडे बंधु भास  
जे जे हेनु ते तां हां सही ॥ पंचुत त्व समास ॥ ३ ॥  
आतं मत मनो तं म सदा ॥ स्व चेतन मे वास ॥ जे  
से भोमी भंडके ॥ वीले होत आकाश ॥ ४ ॥ प्रव  
नी वी लाई तीर मे ॥ नीर सो सायो ते ज ॥ ते ज वी  
सायो पवंत मे ॥ पवंत आकाशे हे ज ॥ ५ ॥ सुं सवी  
लायो सक्रमे ॥ सक्ती पुर स मे समास ॥ सक्  
पुर स जा मे समे ॥ कुवेर बंधु तनु तास ॥ ६ ॥ ती  
र्थी ॥ १२ ॥ द्वादश साधं नदा शको ॥ जब लगी सा  
स उसास ॥ सास उसास समी गयो ॥ तव आ  
पे परकास ॥ १ ॥ जल थल मां ही आपहे ॥ धरणी ग  
गन मो ऊर ॥ या वर जंगम आपहे ॥ आपसक  
ल संसार ॥ २ ॥ बंधा वी सुमा हे श्वर ॥ श्री गुरु रु



पञ्चपार। सेहेस्त्रप्रमासीअनंतकोटी। आप  
 लीयोअवतार॥३॥ चंदासुरप्रकाससे॥ तीमरठ  
 खेनीरवाण॥ तामध्येजोतीताहोरी॥ नीश्वेकरी  
 नेजाण्य॥ ४॥ नवलपताराव्योमव्या॥ कोटीत्री  
 शत्रीयोसुर॥ तामध्येवासोताहोरो॥ नुरसदा  
 नरसुर॥ ५॥ धरणीधराजेसेसजी॥ तामध्येतु  
 अंश॥ केहंकुवेरडुजोनही॥ सकलबुंलकीवंश॥  
 ६॥ तीथी॥ १३॥ तेरसअगमअपारहे॥ जांणीस  
 केकोईसंत॥ कंचीतदरसेजेहते॥ जोहोयनेन  
 अनंत॥ १४॥ दोदोलीचनसरवकु॥ नीरयंतकुप  
 दछीन॥ चतुरलोचनवीद्यातणां॥ भासतभीता  
 भीन॥ १५॥ जंमछेतंमदरसेनही॥ ज्ञाननेत्रवी  
 नाकोय॥ जोदरसेसोअल्पहे॥ दृष्टपदारथसो  
 य॥ १६॥ बीनानेनकुनीरषवु॥ बीनासुरतीको  
 ध्यान॥ बीनरसनारसअगमहे॥ बीनचीत  
 वंतकोज्ञान॥ १७॥ बीनजांतनकोजांतवो॥ बीनव  
 स्तीकोगाम॥ बीनतंतुकोतेजहे॥ बीनधाताकी  
 धाम॥ १८॥ बीनईशाकोईसहे॥ बीनकरणीकीरता  
 र॥ केहंकुवेरसोपदलगे॥ पोहोचेपोहोचनहार॥  
 १९॥ तीथी॥ १९॥ चौदलोकसुपतेहते॥ अणावंतछे  
 जेह॥ अजवेकुंवकैलासपद॥ सुपतेतांहीसतेह॥



तीर्थी

॥५५

॥ जाचकभावजेहेनेनही ॥ करताहरताआप ॥  
अहंबुंलउदेहवो ॥ नकरेदीनवीलाप ॥ २ ॥ उपजे  
षपेसुहुआपमे ॥ अगणीतजीवअसंघ ॥ अनेक  
अंमंडभागघडे ॥ आपसदातीसेष ॥ ३ ॥ सबघ  
टयोस्रणआपतु ॥ चेतनसक्तीमोत ॥ तीगंमचार  
वीसथुई ॥ बोलेअक्षरतीओत ॥ ४ ॥ दशपंथपोता  
तण ॥ षट्दरसंतमतआप ॥ जोगीथईजुगतेजपे  
पोतेपोतातोजाप ॥ ५ ॥ नीरगुणबुंलपरापरा ॥ सी  
रगुणरूपपराय ॥ पिसपसंतीमध्यमा ॥ वैषरीकुवे  
रसराय ॥ ६ ॥ तीर्थी ॥ १५ ॥ पुंन्यमेपरसीधवारता  
षगटकहुपीकार ॥ जांतनहाराजाणजो ॥ बुंलनी  
रूपणसार ॥ १ ॥ आभवकेजुगइसरे ॥ जोधरेजन  
सअपार ॥ जबएवस्तुवीलोकसो ॥ तबहोवेनीस्त्रा  
रा ॥ २ ॥ सबसारनकोसारहे ॥ सबज्ञाननकोज्ञा  
न ॥ सबजोगनकोजोगहे ॥ सबध्याननकोध्या  
न ॥ ३ ॥ सबभेदनकोभेदहे ॥ सकलसमरुकी  
चोच ॥ सकलरूपकोनीरुपहे ॥ अगंसगतीअ  
वीलोच ॥ ४ ॥ नामअनामीआपहे ॥ अदबदव  
स्तअमाप ॥ बुंलअध्यातंसबोधहे ॥ संतसकल  
कोजाप ॥ ५ ॥ जापसकलएहीसंतको ॥ षेवटके  
नीजसोय ॥ तोकरताएहीकरतके ॥ उवसेनही



कीनुकोय ॥ ६ ॥ सोलेतीथी संमपुरण ॥ जनीत  
 वबुंलवीचार ॥ जेही नीजसार वेदांतनु ॥ कीने  
 हुकुवेरपोकार ॥ ७ ॥ तीथी ॥ १६ ॥ एहीवीधीआप  
 कबुंलके ॥ करीतसकलनीरधार ॥ नीजकर  
 तानहीपाईया ॥ रहोवारकेवार ॥ ११ ॥ नीजकरता  
 केवलकुल ॥ जीनुहंबुंलप्रकाश ॥ तेहीपरकासा  
 नकेकीनु ॥ षोजनकीयेनीवास ॥ १२ ॥ क्योंकरीयो  
 जलहेतीनु ॥ जीनुजगजोससरीर ॥ ईतुनहोय  
 अगमगती ॥ नीजपतीजांणजहीर ॥ १३ ॥ तबजे  
 तनेतनुतत्वके ॥ रजबीजकेभवभेस ॥ प्रकृती  
 आद्यगुणघणतुह ॥ रजकेसाजसजेस ॥ १४ ॥ यां  
 हांलगउतईतकोउकीनु ॥ कलीतननीजकी  
 रतार ॥ तोईतकेहीआचारज ॥ क्योंकरीसकेस  
 कार ॥ १५ ॥ तातेआतुगभरंनके ॥ नीजपतीलह  
 हीनलोय ॥ केहंकुवेरगुंननीगुंतमे ॥ अटकरहे  
 सबकोय ॥ १६ ॥ जोतुंमहीहंसकु कहो ॥ तुमेसोकुं  
 नसरीर ॥ तीनकेदेउपरीउतर ॥ जोसुनहीध  
 रीधीर ॥ १७ ॥ अविगतपुरशअरसुहते ॥ आयेहु  
 अवत्समोजार ॥ आभवीइतअजनावत ॥ दीने  
 हुदरसदेदार ॥ १८ ॥ आन्नअचांनकसंमतंत ॥  
 तडीतसब्दहंकार ॥ ब्याअमीतअवभवनीज



समरुहेजततसार॥१॥जेहीनीजअंशममुसु  
 की॥होहसरलगतीसोय॥तीनुस्त्रवंनजमी  
 गत्यरत्य॥सहीतंमहरदेसकोय॥१०॥एहीवीध  
 केस्त्रवननजमी॥कहीतंमहदेसमेत॥आतंत  
 करीतघटाघंन॥भीजावंनतेहीघेत॥११॥वित  
 भीजाईतजेहीकर॥पकवीतअंशअमीर॥पा  
 वहीपरमपुनीतपदा॥भवीतअंशसुषसीर॥१  
 २॥एहीअमीप्रायंनतंतमम॥अमीतजमा  
 ईतजेह॥सुतलसाध्यघंतवतपुनी॥वीषरीतह  
 बुवदेह॥१३॥भवीतवदेहवीषरीतंत॥अकल  
 रूपहोयअंश॥जाईमीलुनीजपतीनये॥जीत  
 केहुतेसुवंश॥१४॥आवंनजावंनकेजेही॥कीयेअ  
 मीतमोईतंत॥कलयकलयपरजंतही॥बोधक  
 रुहुजुगजंत॥१५॥सकलअंससीरअधीपती॥  
 हिनीजअंशसमेर॥जुगनजुगनपठवावुह॥ई  
 श्वरअंशघत्ये॥१६॥पणमेंतीकुलकलयमो  
 आवुहएकहीवार॥न्यायसहीतदरसावंन॥पा  
 वंनषुदकीरता॥१७॥जेहीअवतारंनसेजीत  
 षोजनकीयेपनीत॥तेहीकारंतआवहीमम  
 जुगधरकरंतजनीत॥१८॥येसेहीहंमनीजप  
 तीतके॥परमअंशगतीवेत॥केहंकुवररुहस



दा॥सकतपाससहेत॥१५॥बोहोरुपगवहीतांही  
 जुहं॥क्रताकलयकोईकाल॥तहीतररषेहजुरी  
 त॥मेंखुदकेनीजवाल॥२०॥बालकहोइतीजप  
 तीनके॥हुकमेरुहहजुरा॥तरनतोरुहकीयेवी  
 त॥तोकीमहोहसफुर॥२१॥सफुरंतसोईश्वर  
 नता॥ब्रषादेखावंनपेर॥स्रोतीहुकंसवीनाइत  
 कौंकरिसकेकुवेरा॥२२॥जोहुकमेतोसबक  
 यु॥करीसकुजेहीभाव॥पणमेरेपतकीवीभुदे  
 यभयोगरकाव॥२३॥अतीअथाहअपरंमजीनु  
 करतगतीतनहीअंत॥पारसदांसचंतामणी  
 ज्योसुंतकेपरीयंत॥२४॥यावीधीअपरंमक्र  
 तवकी॥क्रताकरतसेत्या॥तांहांमेरेअनुभ  
 वथके॥कौंकरिसकुउचार॥२५॥कीटीकेपद  
 पंगुकेईश्वरसकेनजोड॥तोएहीकुलरचनारं  
 न॥तीनकीकुलसहोड॥२६॥जेहीजेहीप्रचापु  
 रीतइति॥इसभवीतभवसैत॥तेहीसकुलअ  
 भीमांतीके॥क्रतासेतीनहीहेत॥२७॥ईश्वरता  
 जगमांतीये॥हवीतमांनभरपुर॥हुकंसवी  
 नाउनमतहले॥क्रतारहततीनुडर॥२८॥जो  
 केहेसोवीनुहुकंससे॥प्रचाहोयकीमकीताए  
 तनीतोहोयसंमृता॥प्रथंमभक्तीजेहीकीन॥२९



**तीर्थी** जांहां लगतीनु मसागत ॥ तांहां लगतीनु कीया  
 त ॥ तो करता कुवपा लगे ॥ आप हवीतनी रधात  
**॥५७॥ ३० ॥** तब जेतनी जपत पडुकी ॥ संपस्य प्रचेतयो  
 च ॥ इतके इतवीत परचीत ॥ पतीले हेणनको  
 या ॥ ३१ ॥ लेण देणवीनु पतीतसे ॥ तो तुमसे तीनु  
 काव ॥ एतो पला छुट भये ॥ तोतीनके तीत जाव  
 ३२ ॥ तब तेनी जकरतारसे ॥ रघो समंध सबेह  
 जपत पसाधंन संमरण ॥ करीके सधोसनेह  
 ३३ ॥ तोनी जसुध्यसनेहसे ॥ सक्रतकरे सहांप  
 जोतुं मआपन पोतजो ॥ तोपतीले हेबोलाय ॥  
 ३४ ॥ जोपतीले तबोलायके ॥ तोतीनके बडभा  
 ग्य ॥ केहं कुवेर पायपदा ॥ जेआपनी तीज जाग्य  
 ३५ ॥ इती श्री तीर्थी गंथसंपुर्णः ॥ श्रीकेवलपती  
 पदनमः ॥ अथ बुलमायानी रूपं न गंथप्रारंभ  
 ॥ लीष्यते ॥ पडपडके पंडीत भये गुंनवांनवे ॥ छु  
 टेनही लवलेशमायाकी ध्यांनवे ॥ जुगल्ये बोले जो  
 रा ॥ जगतसमजायवे ॥ केहेसत कुवेर सबे मंनभा  
 यवे ॥ १ ॥ त्यंमत्यंमवाधेमंता ॥ अहंमपद आपवे  
 करे जीवनी लाहारपुत्यते पापवे ॥ गयेचो रासी  
 मांहांय सबे अण्डीववे ॥ केहेसत कुवेर आणपंडी  
 तवे ॥ २ ॥ जबही छुटे घाट गाववे रायवे ॥ साचीकीहे